लेपालक

(1:5)

टेड और डॉन स्पेंसर अपने वयस्क जीवन में बाहर वालों के आश्चर्य का पात्र रहे हैं। 47 वर्षीय टेड और 36 वर्षीय डॉन बौने हैं; परन्तु उन्होंने अपनी इस अक्षमता को एक विशेष ढंग से लिया है। अपनी शारीरिक दुर्बलताओं पर ध्यान देने के बजाय उन्होंने जीवन बदलने वाला निर्णय लिया, जिसमें उन्होंने अपने से बड़ी शारीरिक समस्याओं वाले एक बच्चे को गोद ले लिया। अंतत: उन्होंने चार दक्षिण कोरिया और ताईवान के अनाथ बच्चों को भी गोद ले लिया।

टेड शांत और गंभीर है, जबकि डॉन ज़िंदादिल और खर्चीला है। दोनों का मानना है कि बच्चे विशेषकर वे बच्चे जिनका दुनिया में कोई नहीं है कुछ बन सकते हैं, यदि उनमें विश्वास पैदा किया जाए, उनसे प्रेम किया जाए और उन्हें बताया जाए कि ''तुम इसे कर सकते हो।''

यह जानकर कि स्थानीय मण्डली में, स्कूल की कक्षा में, या दज़्तर में कितने लोगों के घरों में कितने लोग गोद लिए गए होंगे, हमें हैरानी होगी। आप में से किसी का कोई भाई या बहन होगा, जिसे आपके माता-पिता ने गोद लिया हो। आप में से किसी ने कोई बच्चा गोद लिया हो सकता है। आप में से कई लोग गोद लिए हुए हो सकते हैं।

परमेश्वर के परिवार में आने का एकमात्र ढंग गोद लिया जाना है। ज़रूरी नहीं कि मनुष्यजाति का सदस्य होने से आप परमेश्वर के परिवार के सदस्य बन गए हों। परमेश्वर के परिवार में हम केवल गोद लिए जाने से ही शामिल हो सकते हैं।

नया नियम परमेश्वर के परिवार में गोद लिए जाने के विषय को तीन जगह बताता है (रोमियों 8:15, 23; गलतियों 4:5; और इफिसियों 1:5)। ये तीनों हवाले पौलुस के लेखों में मिलते हैं। इफिसियों 1:5 कहता है कि उसने ''अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों।''

हर मसीही का पिता परमेश्वर है। हमें गोद लिया गया अर्थात लेपालक है। अब हम परमेश्वर के बेटे और बेटियां हैं। मेरे ज़्याल से जीवन की सबसे बड़ी चुनौती इस तथ्य को समझना और अपने जीवनों में काम करने देना है।

जे. आई. पैकर ने ज़ोर देकर कहा कि यहां ज़्या होना चाहिए:

> जानने के लिए कि कोई मसीहियत को कितनी अच्छी तरह से समझता है, यह देखें कि वह अपने आप को परमेश्वर की संतान और परमेश्वर को पिता के रूप

में कितना मानता है। यदि आराधना तथा उसकी प्रार्थनाओं और उसके सम्पूर्ण जीवन का दृष्टिकोण इस विचार से प्रेरित नहीं है, तो इसका अर्थ है कि उसे मसीहियत की कोई समझ नहीं है।[1]

परमेश्वर के परिवार में गोद लिया जाना मनुष्य को प्रस्तुत की गई सभी आत्मिक आशिषों में से सबसे बड़ी आशीष की व्याख्या हो जाती है।

लेपालकः इसका अर्थ

पौलुस ने लिखा, ''उस [परमेश्वर] ने ... प्रेम में ... हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों'' (1:4ग, 5)। पौलुस ने मसीही लोगों के लिए ''लेपालक'' (यू: *huiothesia*) शब्द का इस्तेमाल क्यों किया? लेपालक या गोद लिए जाने से हमें यह समझने में कैसे सहायता मिलती है कि हम कौन हैं और परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है?

पौलुस अपने पाठकों को उनकी दुनिया की बातों से समझा रहा था। गोद लिए जाने की प्रक्रिया प्रभावशाली घटनाएं होती थीं। लम्बी कानूनी प्रक्रिया से गोद लिए जाने की गंभीरता का पता चलता था। गोद लिए जाने वाले को कानूनी कार्यवाही पूरी हो जाने पर एक नई पहचान मिल जाती थी। विलियम बार्कले ने इसे इस प्रकार लिखा है:

> गोद लिए जाने (लेपालक होने) की बात पूरी हो जाने पर यह वास्तव में पूरी हो जाती थी। गोद लिए जाने वाले व्यक्ति को अपने नये परिवार में कानूनी वंशज होने के सभी अधिकार मिल जाते थे और उसके पिछले परिवार के सभी अधिकार पूरी तरह से खत्म हो जाते थे। कानूनी तौर पर वह एक नया व्यक्ति बन जाता था। वह इतना नया बन जाता था कि पिछले परिवार के साथ जुड़े उसके सभी कर्ज़ और दायित्व ऐसे मिट जाते थे जैसे कभी हों ही न।[2]

पौलुस ने चाहा कि हम जान जाएं कि परमेश्वर ने हमें इसी प्रकार गोद लिया है। गोद लिए जाने या लेपालक होने से पहले हम आत्मिक गुलाम ही थे। हम बुरी तरह से कर्ज़ में डूबे हुए अर्थात पाप के हाथ बिके हुए, मृत्यु के लिए ठहराए हुए, संसार में आशाहीन और परमेश्वर रहित थे। परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम रखा कि उसने हमें छुड़ाने और हमारा उद्धार करने के लिए हमें गोद ले लिया!

परमेश्वर ने हमारे लिए यह सब कुछ अपने पुत्र को भेजकर किया। यीशु के सम्बन्ध में यूहन्ना 1:12 कहता है, ''परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्होंने जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।'' परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार हर व्यक्ति को नहीं है। केवल वही लोग जो यीशु में पूर्ण भरोसा करते और उसकी अज्ञाओं को मानते हैं, परमेश्वर की सच्ची संतान बन सकते हैं।

गलतियों 4:4, 5 कहता है, ''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को

ज़ेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले।'' परमेश्वर ने मसीह को भेजा ताकि हमें छुड़ाकर परमेश्वर के परिवार में गोद ले सके।

लेपालक होना या गोद लिया जाना ज़्या है ? लेपालक होने का ज़्या अर्थ है ? इसका अर्थ अतीत में से निकालना है। गोद लिए जाने की बात परमेश्वर द्वारा उसकी संतान होने के लिए की जा रही है। गोद लिया जाना या लेपालक होना हमारे छुड़ाए जाने के लिए परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य है।

गुलामों के पास से गुज़रते हुए अब्राहम लिंकन ने एक बार एक लड़की को बिकते हुए देखा। उसका मन पसीज गया। उन्होंने बोली लगाई और अन्ततः वह लड़की उनकी हो गई। दाम चुका देने के बाद, उन्होंने उस लड़की से कहा, ''अब तुम स्वतन्त्र हो।''

''इसका ज़्या अर्थ है ?'' उस लड़की ने पूछा।

''इसका अर्थ है कि तुम आज़ाद हो,'' लिंकन ने उज़र दिया।

''ज़्या इसका अर्थ यह है कि मैं जो चाहूं बन सकती हूं ?''

''हां, तुम जो चाहो बन सकती हो।''

''ज़्या इसका अर्थ यह है कि मैं कहीं भी जा सकती हूं ?''

''हां, तुम कहीं भी जा सकती हो।''

आंखों में आंसू भरे उस युवती ने लिंकन की ओर देखा और कहा, ''तो फिर मैं आपके साथ ही जाऊंगी।''

परमेश्वर ने आपके लिए यही तो किया है। उसने आपको आज़ाद कर दिया है। इससे भी बढ़कर उसने आपको गोद लेकर अपनी संतान बना लिया है।

लेपालकः इसकी आशिषें

पहली आशीषः पिता का प्रेम

''उसने ... *प्रेम में* ... हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, ...'' गोद लिया जाना या लेपालक होने की बात हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम को व्यज़्त करती है।

नया नियम हमें अपने लिए परमेश्वर के प्रेम की सीमा को समझने में सहायता करता है। यह हमें उसके अद्‌भुत प्रेम को मापने की दो छड़ियां देता है। इनमें पहली छड़ी तो क्रूस है: ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (रोमियों 5:8)। ज़्या आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर आपसे कितना प्रेम करता है ? गुलगुता पर ध्यान लगाएं। ज़्या आप अपने लिए परमेश्वर के प्रेम को मापना चाहते हैं ? तो, कलवरी पर ध्यान दें।

परमेश्वर के प्रेम को मापने की दूसरी छड़ी पुत्र होने का वरदान है: ''देज़ो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी: ...''

(1 यूहन्ना 3:1)। गोद लिए जाने के द्वारा, हमें उसका प्रेम मिलता है। हमें बचाने का, क्षमा करने का या गोद लेने की उसे कोई ज़रूरत नहीं थी। परमेश्वर ने ये तीनों काम हमारे लिए अपने प्रेम के कारण किए।

वज़्ता बनकर एक व्यज़्ति ऑस्ट्रेलिया में गया हुआ था। एक दिन सुबह जब काम वाली उसके होटल का कमरा साफ़ करने आई तो वह अध्ययन के लिए हॉल में चला गया। नोट्स देखते हुए उसे सारंगी की धुन बजने का शोर सुनाई देता रहा। इससे उसकी एकाग्रता भंग हो गई और वह क्रोधित हो गया। आखिर, अपने कमरे में जाकर उसने काम वाली से इस शोर को बंद करने के लिए कहा।

वह कहने लगी, ''आप जानते हैं कि सारंगी कौन बजा रहा है?''

''नहीं तो। कौन बजा रहा है?''

''वह विश्व प्रसिद्ध सारंगीवादक येहुदी मेनुहिन हैं। वह आज रात होने वाले संगीत समारोह के लिए अज़्यास कर रहे हैं।''

वह व्यज़्ति हैरान हो गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। जल्दी से उसने एक कुर्सी उठाई और उस महान कलाकार को अज़्यास करते हुए सुनने के लिए हॉल में जाकर बैठ गया। बाद में, उसने जो कुछ सुना उसके लिए वह केवल यही कह पाया: ''यह एक शानदार संगीत समारोह था, ऐसा मैंने पहले कभी नहीं सुना था-लेकिन यह पता चलने पर कि कौन बजा रहा है।''

यदि आप परमेश्वर की संतान हैं, तो अपने जीवन के संगीत को ध्यान से सुनें। हो सकता है कि आप इसकी ओर ध्यान न दे रहे हों। यह हर समय बजता है और सुने जाने की प्रतीक्षा करता है। यह हमारे सुनने और आनन्द के लिए हमारे आस-पास ही रहता है। यह परमेश्वर के प्रेम का संगीत है। यदि हमें पता हो कि संगीत की धुन कौन बजा रहा है तो हम जीवन को कभी पहले की तरह न देखें।

दूसरी आशीष: पज़्की आशा

परमेश्वर के परिवार में उज़म हमेशा अभी आने वाला होता है। मसीहियत आशा का धर्म है। परमेश्वर की संतान के रूप में हम उस अविश्वसनीय मीरास की आशा करते हैं जिसकी परमेश्वर ने स्वयं गारंटी दी है (1:14)।

परमेश्वर की संतान होने के कारण हमें मसीह की महिमा में शामिल होने की आशा भी है (रोमियों 8:17)। पहला यूहन्ना 3:2 कहता है, ''हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की संतान हैं, और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम ज़्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, ज़्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।''

परमेश्वर की संतान होने के कारण हम वहां, जिसे स्वर्ग कहा जाता है, सबसे बड़े पारिवारिक रूप से इकट्ठे होने की आशा करते हैं। वहां हम सदा के लिए प्रभु के साथ और परमेश्वर के परिवार के साथ होंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। एक अंग्रेज़ी गीत के अनुवाद

पर विचार करें:

कभी मिलकर हम हंसते हैं,
कभी रोते हैं;
कभी मन की पीड़ा और आहों को
एक दूसरे के साथ बांटते हैं;
कभी मिलकर हम स्वप्न देखते हैं कि
स्वर्ग में सब के साथ,
परमेश्वर के परिवार में मिलकर कैसा लगेगा।[3]

लेपालक होने की आशा की आशिषों के कारण हम ऐसे गीतों से अपनी आवाज़ बुलंद करते हैं।

लेपालकः इसकी ज़िम्मेदारियां

जे. आई. पैकर ने गोद लेने के विषय में कहा कि ''सम्पूर्ण मसीही जीवन को इसके अर्थ में समझा जाना चाहिए।''[4] यीशु का जीवन ऐसा इसलिए था क्योंकि वह जानता था कि वह कौन है–परमेश्वर का पुत्र। यह ज्ञान कि परमेश्वर हमारा पिता है और हम उसकी संतान हैं, हमें अपने जीवनों को आकार देने में सहायता करने वाला बनना चाहिए। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने इस बात पर ज़ोर दिया था। ध्यान दें कि परमेश्वर को पिता के रूप में जानने वालों को उपदेश देते हुए यीशु ने क्या कहा था।

1. *हम परमेश्वर की संतान की तरह रहें।* ऐसा हम परमेश्वर का अनुसरण करके करते हैं। यीशु ने कहा, ''तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, अपने पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने बैरी से बैर। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो; जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे।...'' (मत्ती 5:43–45)।

परमेश्वर की संतान होकर रहने का अर्थ परमेश्वर का अनुसरण करना है। इसका अर्थ पिता का नाम रोशन करना भी है। हम पढ़ते हैं, ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें'' (मत्ती 5:16)।

परमेश्वर का अनुसरण करके, उसके नाम को महिमा देकर और मनुष्यों को नहीं बल्कि उसे प्रसन्न करते रहकर हम उसकी संतान बनकर रहते हैं। ''सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे'' (मत्ती 6:1)।

2. *हम परमेश्वर की संतान के रूप में प्रार्थना करें।* गोद लिए हुए या संतान के रूप में परमेश्वर के सामने हम ''हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है'' कहकर प्रार्थना करते हैं (मत्ती

6:9)। हमें चाहिए कि हम बिना सोचे समझे पिता से एक ही चीज़ बार-बार मांगने से परहेज़ करें (मत्ती 6:7, 8)। हम मन खोलकर हियाव से उसके सामने प्रार्थना कर सकते हैं: ''मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे। खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा'' (मत्ती 7:7)।

3. *परमेश्वर की संतान होने के कारण हम भरोसा रखें।* हम बिना किसी अनुचित चिंता के रह सकते हैं। केवल यह भरोसा होना आवश्यक है कि हमारा पिता हमारी हर वास्तविक ज़रूरत को पूरा करेगा। ''ज़्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी'' (मत्ती 6:32, 33)।

लेपालक होने की आशिषें भी हैं और जिज़्मेदारियां भी। हम में से अधिकतर लोगों को याद होगा कि हमारे माता-पिता हमारे पास हमें परिवार का नाम रोशन करने के लिए उत्साहित करने को बैठे थे।

परमेश्वर के परिवार में भी यह आवश्यक है। विशेष अधिकारों के साथ-साथ ज़िज़्मेदारियां भी जुड़ी होती हैं। बिना जिज़्मेदारी या कर्ज़व्य के कोई अधिकार नहीं होता। परमेश्वर के परिवार में लेपालक होने की आशिषों या लाभ विशेषाधिकारों के साथ परमेश्वर के परिवार के सदस्यों के रूप में रहने का दायित्व भी है।

सारांश

''ज़्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और ज़्लेश उस महिमा के साज़्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं। ज़्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है'' (रोमियों 8:18, 19)। यह तो ऐसा है जैसे सारी सृष्टि, जिसमें सभी स्वर्गीय जीव भी हैं, एक बहुत बड़े जनसमूह के रूप में एकत्रित होकर सांस रोके पर्दा उठने की प्रतीक्षा करते हैं। युग के अंत में अन्तत: पर्दा उठने पर, सारी सृष्टि आश्चर्य से हांफेगी। परमेश्वर के लेपालक लोगों को मिली महिमा के कारण सारी सृष्टि में यह स्वर सुनाई देगा।

टिप्पणियां

[1]जे. आई. पैकर, *नोइंग गॉड* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1973), 182. [2]विलियम बार्कले, *द लैटर्स टू द गलेशियंस एण्ड इफिसियंस,* द डेली बाइबल स्टडी सीरीज़, संशो.: संस्क. (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 80. [3]लैनी वोल्फ, ''गॉड'स फैमिली,'' *सॉंग्ज़ ऑफ़ फेथ एण्ड प्रेज़* (वेस्ट मोनरो, ला.: हॉवर्ड पज़्लिशिंग कं. 1994), 744. © 1974. लैनी वोल्फ ज़्यूज़िक/ASCAP. सर्वाधिकार पाथवे ज़्यूज़िक, पो. आ. बॉज़्स 2250, ज़्लीवलैण्ड, टैनि. 37320 के अधीन। अनुमति लेकर छापा गया। [4]पैकर, 190.